PK टाइम्स

लोक टुडे

विश्वसनीय खबरों का सर्वश्रेष्ठ अखबार

pktimesnews.com
loktodaynews.com
PK Times News
thepktimesofficial
pk_timesofficial

वर्ष: 12 | अंक: 290 | मूल्य: 1.00 रुपए | पृष्ठ: 4 | बुधवार, 06 मई, 2026 | RNI No. RAJHIN/2013/50649

प्रेस कॉन्फ्रेंस : भाजपा पर 100 सीटें लूटने का आरोप

हार नहीं, साजिश : ममता

इस्तीफा देने से इनकार | चुनाव आयोग को 'विलेन' बताया

KEY POINTS

- इस्तीफा देने से साफ इनकार
- चुनाव आयोग पर पक्षपात का आरोप
- भाजपा पर काउंटिंग सेंटर कब्जे का दावा
- फैक्ट-फाइंडिंग कमेटी बनाने का ऐलान

लोक टुडे। कोलकाता@ पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने 2026 के विधानसभा चुनाव परिणामों के बाद इस्तीफा देने से साफ़ इनकार कर दिया है। 5 मई 2026 को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान उन्होंने आरोप लगाया कि उनकी हार नहीं हुई है, बल्कि उन्हें एक साजिश के तहत हराया गया है।

चुनाव आयोग बना विलेन

ममता बनर्जी ने स्पष्ट किया कि वह राजभवन जाकर इस्तीफा नहीं देंगी। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा सामान्य रूप से जीतती तो वह पद छोड़ देतीं, लेकिन इस नतीजे को वह अनैतिक जीत मानती हैं। उन्होंने चुनाव आयोग को इस चुनाव का विलेन करार दिया और मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार पर निशाना साधा। ममता का आरोप है कि आयोग भाजपा के पक्ष में काम कर रहा था।

भाजपा पर काउंटिंग सेंटरों पर कब्जे का आरोप

ममता ने आरोप लगाया कि भाजपा ने काउंटिंग सेंटरों पर कब्जा कर लिया था। उन्होंने कहा- मेरे पेट और पीठ पर लात मारी। धक्का देकर बाहर निकाला। ममता ने आरोप लगाया कि भाजपा और चुनाव आयोग ने एसआईआर के बहाने 100 सीटें लूटीं।

कई सरकारें देखी, लेकिन ऐसा अत्याचार कभी नहीं

मैंने राजीव गांधी, मनमोहन सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी सहित कई सरकारें देखीं, लेकिन ऐसा अत्याचार कभी नहीं देखा। अत्याचार की कोई सीमा नहीं रही। यहां लोगों को प्रताड़ित किया गया। पहले राउंड की काउंटिंग के बाद ही वे कहने लगे कि भाजपा 195-200 सीटें जीत रही है। आपने अंतिम नतीजे का इंतजार नहीं किया। बीजेपी वालों ने पोलिंग स्टेशन के अंदर घुसकर लोगों और काउंटिंग एजेंट्स को पीटना शुरू कर दिया। हम चुनाव आयोग के खिलाफ कदम उठाएंगे। क्या करेंगे, यह अभी नहीं बताएंगे। दूसरी बात, हमने फैसला किया है कि 5 सांसदों समेत 10 लोगों की एक फैक्ट-फाइंडिंग कमेटी बनाई जाएगी।

पश्चिम बंगाल में अब नया नेतृत्व

चुनावी नतीजों के अनुसार भारतीय जनता पार्टी ने पश्चिम बंगाल में भारी बहुमत हासिल कर लिया है और अब राज्य के लिए औद्योगिक पुनरुद्धार और भयमुक्त शासन को अपना मुख्य एजेंडा बनाया है। राज्य की खोई हुई औद्योगिक पहचान को वापस लाना भाजपा की प्राथमिकता है। इसमें भारी उद्योगों (स्टील, टेक्सटाइल) को पुनर्जीवित करना और राज्य को पूर्वी भारत के गेटवे के रूप में विकसित करना शामिल है। भाजपा का लक्ष्य राज्य में भयमुक्त वातावरण बनाना है। अवैध घुसपैठ पर लगाम लगाना और सीमा सुरक्षा को राष्ट्रीय सुरक्षा का मुख्य हिस्सा बनाना पार्टी के एजेंडे में शीर्ष पर है। जीत के बाद अब भाजपा एक बंगाली मूल के मुख्यमंत्री की नियुक्ति पर विचार कर रही है ताकि बाहरी होने के नैरेटिव को पूरी तरह खत्म किया जा सके। केंद्र और राज्य में एक ही पार्टी की सरकार होने के लाभ को भुनाते हुए भाजपा बुनियादी ढांचे (लॉजिस्टिक्स और पोर्ट विस्तार) और आईटी क्षेत्र में बड़े निवेश का प्लान बना रही है। वहीं पार्टी ने अपने संकल्प पत्र के अनुसार महिला सुरक्षा, भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं को पारदर्शी तरीके से लागू करने की योजना बनाई है।

दावा- अमेरिकी विमान कतर के एयरस्पेस से लापता

इमरजेंसी सिग्नल देकर रडार से गायब हुआ

ईरानी एजेंसी बोली- हमारा कोई रोल नहीं

तेल अवीव/तेहरान/वॉशिंगटन डीसी

मिडिल ईस्ट में बढ़ते तनाव के बीच अमेरिकी वायुसेना का एक KC-135 स्ट्रैटोटैंकर विमान कतर के ऊपर इमरजेंसी सिग्नल देने के बाद लापता हो गया। KC-135 स्ट्रैटोटैंकर को 'फ्लाइंग गैस स्टेशन' कहा जाता है, क्योंकि यह हवा में अन्य सैन्य विमानों को ईंधन भरने में सक्षम है।

ईरान की फॉर्स न्यूज एजेंसी के मुताबिक, विमान ने उड़ान के दौरान '7700' इमरजेंसी सिग्नल भेजा। यह सिग्नल तब दिया जाता है जब विमान में कोई गंभीर समस्या हो। हालांकि इसमें ईरान की किसी भी भूमिका की बात नहीं कही गई।

यह विमान UAE के अल धफरा एयर बेस से उड़ा था और फारस की खाड़ी के ऊपर उड़ रहा था। इसी दौरान कतर के पास उसका सिग्नल कुछ समय के लिए गायब हो गया। फ्लाइट डेटा के मुताबिक, विमान कुछ देर तक आसमान में चक्कर लगाता रहा और फिर नीचे उतरने लगा।

अभी तक यह साफ नहीं है कि विमान में क्या खराबी आई थी। यह भी नहीं पता कि यह कोई तकनीकी समस्या थी या कुछ और। अमेरिका ने इसे लेकर जानकारी शेयर नहीं की है।

UAE के पेट्रोलियम प्लांट पर हमला: ईरान ने UAE के फुजैराह में एक पेट्रोलियम प्लांट पर ड्रोन हमला किया। इससे इंडस्ट्री एरिया में आग भड़क उठी। इसमें 3 भारतीय भी घायल हुए हैं।

प्रोजेक्ट फ्रीडम शुरू: अमेरिका ने होर्मुज के आसपास प्रोजेक्ट फ्रीडम पहल शुरू किया। इसके तहत होर्मुज में फंसे विदेशी जहाजों को सुरक्षित बाहर निकालने में मदद करने का वायदा किया गया है।

साउथ कोरियाई जहाज पर हमला: होर्मुज स्ट्रेट में दक्षिण कोरिया के एक जहाज पर हमला हुआ जिससे आग लग गई। ट्रम्प का कहना है कि यह हमला ईरान ने किया। किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

जब्त ईरानी जहाज सौंपा: अमेरिकी सेना ने जब्त ईरानी जहाज टूस्का को पाकिस्तान को सौंप दिया। इसे 22 क्रू मेंबर के साथ ईरान भेजा गया। अमेरिकी नेवी ने 21 अप्रैल को इस जहाज को पकड़ा था।

ईरान में तीन लोगों को फांसी: ईरान में मोसाद से जुड़े होने के आरोप में लोगों को फांसी दे दी गई। इन पर जनवरी 2026 में तख्तापटल की साजिश का आरोप था। इस साल 25 राजनीतिक कैदियों को फांसी दी जा चुकी है।

विपक्ष को हार बर्दाश्त नहीं, लोकतंत्र में जनादेश सर्वोपरि : राठौड़

जनादेश पर सियासी संग्राम ; भाजपा-कांग्रेस में आरोप-प्रत्यारोप हुए तेज

लोक टुडे। जयपुर

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम सामने आने के बाद देशभर में सियासी घमासान तेज हो गया है। राजस्थान में भी भाजपा और कांग्रेस के बीच आरोप-प्रत्यारोप का दौर खुलकर सामने आया है। दोनों ही दल चुनाव प्रक्रिया, लोकतांत्रिक संस्थाओं और शासन व्यवस्था को लेकर एक-दूसरे पर गंभीर सवाल खड़े कर रहे हैं। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने विपक्ष पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि लोकतंत्र में जनादेश सर्वोपरि होता है, लेकिन कुछ विपक्षी दल अपनी हार स्वीकार करने के बजाय निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठाकर जनता के फैसले का अपमान कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि भारत की चुनाव प्रणाली विश्व में पारदर्शिता और निष्पक्षता के लिए जानी जाती है, ऐसे में उस पर संदेह जताना लोकतांत्रिक परंपराओं को कमजोर करने जैसा है। राठौड़ ने दो टूक कहा कि भाजपा ने हमेशा सेवा, समर्पण और संघर्ष के दम पर जनता का विश्वास अर्जित किया है और हर परिस्थिति में जनादेश का सम्मान किया है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संदेश का उल्लेख करते हुए कहा कि राजनीति बदले की भावना से नहीं, बल्कि विकास और जनहित के आधार पर होनी चाहिए। पश्चिम बंगाल का जिक्र करते हुए राठौड़ ने वहां की कानून व्यवस्था और राजनीतिक हिंसा पर चिंता जताई और आरोप लगाया कि भाजपा कार्यकर्ताओं को निशाना बनाया गया। इसके बावजूद प्रधानमंत्री ने संयम और विकास की राजनीति का संदेश दिया, जो एक जिम्मेदार नेतृत्व का उदाहरण है। राठौड़ ने विपक्ष पर 'चयनात्मक सोच' अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि जहां उन्हें जीत मिलती है, वहां वे लोकतंत्र की जीत बताते हैं और जहां हार होती है, वहां संस्थाओं पर सवाल खड़े कर देते हैं। इसके साथ ही राठौड़ ने आरजीएचएस योजना को लेकर उठ रहे सवालों पर सफाई देते हुए कहा कि सरकार का उद्देश्य योजना को बंद करना नहीं, बल्कि उसे अधिक पारदर्शी और प्रभावी बनाना है। उन्होंने माना कि कुछ स्थानों पर दुरुपयोग की शिकायतें सामने आई हैं, जिनकी जांच की जा रही है, लेकिन आम जनता की सुविधाओं को प्रभावित नहीं होने दिया जाएगा।

शिकारियों ने की गश्त पर निकले कॉन्स्टेबल की हत्या

पुलिस की तत्परता ; 12 घंटे में खुलासा, झाड़ियों में छिपे देख टोका था, बारूद की गंध से पकड़े गए हत्यारे

लोक टुडे। जयपुर

टोंक के उनियारा में कॉन्स्टेबल की हत्या के मामले का पुलिस ने तत्परता दिखते हुए 12 घंटे में ही खुलासा कर दिया है। कांस्टेबल की हत्या 2 शिकारियों ने की थी। दोनों इलाके में वन्यजीवों के शिकार की फिराक में झाड़ियों में छिप कर बैठे थे। गश्त पर निकले कॉन्स्टेबल ने उन्हें टोका तो झगड़ने लगे और कॉन्स्टेबल को गोली मार दी। वारदात 4 मई सुबह 3 बजे की है। टोंक एएसपी रतनलाल भार्गव ने बताया कि आरोपियों को 12 घंटे बाद जंगल से ही पकड़ा गया था। टोंक ASP रतनलाल भार्गव ने बताया- बनेठा थाने के उनियारा इलाके में रविवार सुबह 8 बजे कॉन्स्टेबल भागचंद सैनी (26) का शव मिला था। भागचंद की बनेठा थाना क्षेत्र की ककोड़ चौकी पर पोस्टिंग थी। वे रात को गश्त पर निकले थे। मर्डर को लेकर परिवार ने बजरी माफिया पर शक जताया था। पुलिस ने रविवार शाम को जहां लाश मिली, वहां के पास के जंगल में सर्च शुरू किया। रूपवास के जंगल में राजेश (32) पुत्र बजरंग लाल मीणा निवासी मोटीस की झोपड़ियां, उनियारा (टोंक) और दिलराज (32) पुत्र सोहन लाल मीणा निवासी भट्टो के छुपे मिले।

बारूद की गंध से शक गहराया :

जंगल में सर्च के दौरान पुलिस टीम को बारूद की गंध भी आ रही थी। जहां से आरोपियों को पकड़ा गया, वहां भी वैसी ही गंध महसूस हुई। आरोपियों से सख्ती से पूछताछ की गई, तो उन्होंने अपना जुर्म कबूल कर लिया। आरोपियों के पास से हत्या में टोपीदार बंदूक, बाइक, छर्रे व बारूद और एक छुरा भी बरामद मिला। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इसी बंदूक से फायर किया गया था।

शिकार करने आए थे आरोपी :

एएसपी ने बताया- आरोपी बजरंग मीणा और दिलराज मीणा पेशे से ड्राइवर हैं। शनिवार की रात ये दोनों घटना की रात घटनास्थल (रूपवास मोड़) के पास वन्यजीवों- मोर, खरगोश, तीतर का शिकार करने गए थे। भागचंद ने जब इनसे पूछताछ की तो इन्होंने उससे झगड़ा शुरू कर दिया। इसके बाद उसे गोली मार दी।

कॉन्स्टेबल की चार साल पहले हुई थी शादी :

भागचंद (26) की 21 अप्रैल 2022 को टीना के साथ शादी हुई थी। उनके 21 महीने का बेटा कार्तिक है। भागचंद के 2 भाई और तीन बहनें हैं। वह सबसे छोटे थे। उनकी 2018 में नौकरी लगी थी। पिता कालू लाल सैनी 1994 में पार्षद रहे थे

डोटासरा बोले - जीत के जश्न में मुख्यमंत्री झालमुड़ी खा रहे हैं, जबकि उनका चुनाव में क्या योगदान ?

लोक टुडे। जयपुर

हाल ही में सम्पन्न पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के बाद केरलम में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता विपक्ष राहुल गांधी, संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल तथा महासचिव प्रियंका गांधी के अथक प्रयासों से दस वर्ष बाद कांग्रेस गठबंधन की सरकार भारी बहुमत से बनी है, जिसे लेकर सभी कांग्रेसजनों में खुशी की लहर है।

ऐसे समय जब भाजपा केन्द्रीय सत्ता का दुरूपयोग कर रही है, धनबल और बाहुबल से पार्टियां तोड़ी जा रही है। ईडी, इनकम टैक्स, सीबीआई जैसी संवैधानिक संस्थाओं का दुरूपयोग विपक्ष के नेताओं को डराने के लिये किया जा रहा है तथा इलेक्शन कमीशन अपनी निष्पक्ष भूमिका निभाने की बजाय भाजपा के ईशारे पर कार्य कर रहा हो, तब कांग्रेस के मजबूत कार्यकर्ताओं ने इन पाँच राज्यों में पूरी मेहनत से कार्य किया। जिसके परिणामस्वरूप केरलम में कांग्रेस पार्टी भारी बहुमत के साथ सत्ता में लौटी है।

पंजाब के कुख्यात गैंगस्टर जीशान अख्तर के गुर्गे को एजीटीएफ ने बांदीकुई से दबोचा

विदेश में बैठे गैंगस्टर से जुड़कर व्यापारी के ऑफिस पर की थी फायरिंग; एक महीने की कड़ी निगरानी के बाद मिली सफलता

लोक टुडे। जयपुर

राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स (एजीटीएफ) ने संगठित अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल करते हुए पंजाब में रंगदारी और फायरिंग के मामले में फरार चल रहे एक गैंगस्टर को दौसा जिले के बांदीकुई से दस्तयाब किया है। आरोपी चन्द्रप्रकाश शर्मा उर्फ चन्दू शर्मा पुत्र जगदीश शर्मा बांदीकुई का रहने वाला है। एजीटीएफ के अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस दिनेश एमएन के निर्देश पर संगठित अपराधियों और फरार आरोपियों के खिलाफ लगातार सख्त कार्रवाई की जा रही है। इसी कड़ी में गठित विशेष टीम को सूचना मिली थी कि पंजाब के नकोदर सिटी में एक व्यापारी से रंगदारी मांगने और उसके कार्यालय पर फायरिंग की वारदात में शामिल आरोपी राजस्थान में छिपा हुआ है।

एडीजी एमएन ने बताया कि पंजाब के नकोदर शहर में एक व्यापारी को गैंग द्वारा रंगदारी के लिए धमकाया गया था। जब व्यापारी ने बात नहीं मानी तो गैंग के सदस्यों ने उसके ऑफिस बक्शी ट्रेवल्स पर 18 जनवरी 2026 को फायरिंग कर दहशत फैलाने की कोशिश की थी। इस मामले में पंजाब पुलिस ने गैंग के तीन अन्य सदस्यों दीपक, अंकित कुमार और हरिजंदर गुप्ता को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। 3 फरवरी को नाकाबंदी के दौरान पंजाब पुलिस पर फायरिंग करने पर जवाबी कार्रवाई में अंकित कुमार और हरिजंदर घायल भी हुए थे। इस घटना के बाद चन्द्रप्रकाश फरार हो गया और लगातार ठिकाने बदलकर गिरफ्तारी से बचता रहा। पूछताछ में सामने आया कि पंजाब से भागने के बाद यह जयपुर, दौसा के पारासर धाम, लालसोट व अन्य इलाकों में फरारी काट रहा था। एजीटीएफ को पिछले करीब एक महीने से आरोपी की गतिविधियों और लोकेशन को लेकर लगातार इनपुट मिल रहे थे। टीम लगातार उसके ठिकानों और नेटवर्क की निगरानी कर रही थी। सूचना पुख्ता होने पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सिद्धांत शर्मा और पुलिस उपाधीक्षक रविंद्र प्रताप सिंह के सुपरविजन में तथा पुलिस निरीक्षक सुनील जांगिड़ के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई।

एक महीने की निगरानी के बाद बिछाया जाल :

एजीटीएफ टीम ने तकनीकी इनपुट और सूचना के आधार पर जाल बिछा बांदीकुई में दबिश देकर आरोपी चंदू उर्फ चंद्र प्रकाश को पकड़ लिया। आरोपी को विधिक प्रक्रिया पूरी कर पंजाब पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया, जहां उससे पूछताछ जारी है। आरोपी से पूछताछ में गैंग के नेटवर्क, रंगदारी व अन्य आपराधिक गतिविधियों से जुड़े अहम खुलासे होने की संभावना है। प्रारंभिक जांच में सामने आया है कि आरोपी चन्द्रप्रकाश उर्फ चंदू का पहले कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिला है। जांच में यह भी पता चला कि वह हाल ही में पंजाब के गैंगस्टर जीशान अख्तर के गिरोह से जुड़ा था। जीशान अख्तर फिलहाल विदेश में रहकर गैंग ऑपरेट कर रहा है और भारत में अपने नेटवर्क के जरिए रंगदारी व अन्य आपराधिक गतिविधियों को संचालित कर रहा है।इस कार्रवाई में एजीटीएफ टीम के प्लाटून कमांडर सोहन सिंह, हेड कांस्टेबल महेश सोमरा, होशियार सिंह, प्रवीण कुमार, महावीर सिंह, कांस्टेबल जितेन्द्र कुमार के साथ जिला दौसा की डीएसटी टीम की विशेष भूमिका रही।

सम्पादकीय

बरगी बांध हादसा

रोमांच बना मौत का सफर, क्या सिर्फ प्रतिबंध से खत्म होगी लापरवाही

मध्य प्रदेश में जबलपुर के बरगी बांध में एक क्रूज नाव के पलटने से हुए हादसे की त्रासदी ने एक बार फिर नागरिक सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। इस हादसे ने नाव पर सवार होकर रोमांच महसूस करने के कई लोगों के उत्साह को मातम में बदल दिया। हैरानी इस बात की है कि दुर्घटना के बाद प्रशासन के पास नाव में सवार कुल लोगों की सटीक जानकारी तक नहीं थी। अधिकारियों ने टिकटों की संख्या के आधार पर आंकड़ा जारी कर दिया, जबकि कई लोगों के साथ उनके बच्चे भी नाव पर सवार थे।

सवाल है कि नौकाओं के संचालकों के लिए क्या यह नियम जरूरी नहीं होना चाहिए कि टिकट लेने वाले लोगों के साथ उनके बच्चों की संख्या भी दर्ज की जाए, ताकि आपात स्थिति में सुरक्षा बंदोबस्त में कोई कमी न रहे? दूसरी ओर ऐसी खबरें भी आई हैं कि दुर्घटना की शिकार हुई नौका पर पहले से सुरक्षा के पर्याप्त इंतजाम नहीं थे और न ही स्थानीय मौसम के पूर्वानुमान की कोई व्यवस्था थी। ऐसे में इसे व्यवस्थागत लापरवाही नहीं तो और क्या कहा जाएगा।

गौरतलब है कि गुरुवार को बरगी बांध में एक क्रूज नौका तेज आंधी की चपेट में आकर पलट गई थी। इस दुर्घटना में अब तक नौ लोगों के शव बरामद हो चुके हैं, जबकि कुछ लोग अब भी लापता हैं। हादसे में जीवित बचे लोगों का दावा है कि नौका पर सवार किसी भी यात्री ने जीवन रक्षक जैकेट नहीं पहनी थी। जब आपात स्थिति महसूस हुई, तभी वे यात्रियों में वितरित करने की कोशिश की गई, लेकिन कुछ लोगों को इन्हें पहनने का मौका ही नहीं मिला। सवाल है कि जो नियम नौका चालकों को प्रशिक्षण के दौरान अनिवार्य रूप से सिखाए जाते हैं, अगर उन्हें ही नजरअंदाज कर दिया जाए, तो यह सीधे तौर पर लापरवाही को उजागर करता है। यही नहीं, जल पर्यटन के इस क्षेत्र में मौसम पूर्वानुमान की व्यवस्था न होना भी सवाल खड़े करती है। राज्य सरकार ने हादसे के बाद क्रूज नावों के संचालन पर प्रतिबंध लगा दिया है, लेकिन क्या सिर्फ इस कदम से ऐसी दुर्घटनाओं पर पूरी तरह रोक पाएगी। ऐसे में सभी राज्यों को चाहिए कि इस हादसे से सबक लेकर तमाम व्यवस्थाओं में सुधार किया जाए।

वैश्विक संकट बना अमेरिका-ईरान का टकराव

होर्मुज समुद्री मार्ग पर ईरान के आधिपत्य जमाने की कोशिश और इसके जवाब में अमेरिका की ईरानी बंदरगाहों की नाकेबंदी के चलते पूरे विश्व में ऊर्जा का न केवल संकट बरकरार है, बल्कि वह गहराता भी जा रहा है। जहां अमेरिका ईरान के तेल टैंकरों को नहीं निकलने दे रहा है, वहीं ईरान होर्मुज से तेल और गैस लेकर आ रहे जहाजों को रास्ता नहीं दे रहा है। एक तरह से दोनों देश अड़ियल रवैया अपनाए हुए हैं। यह तब है, जब अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम भी कायम है। फिलहाल इस युद्धविराम से दुनिया को कोई लाभ नहीं मिल रहा है, क्योंकि पश्चिम एशिया का संकट यथावत है और होर्मुज पहले की तरह बाधित है। ट्रंप ने युद्धविराम को अनिश्चितकाल के लिए बढ़ाने के बाद जब ईरान पर परमाणु मसले पर जल्द समझौते के लिए दबाव डालना शुरू किया तो प्रारंभ में तो वह इस दबाव का प्रतिकार करते दिखा, लेकिन अपने बंदरगाहों की अमेरिकी नाकेबंदी से वह अब कुछ बेचैन दिख रहा है। इसका कारण यह है कि वह जिस तेल का उत्पादन कर रहा है, उसका निर्यात नहीं कर पा रहा है और उसके पास अब और अधिक तेल के भंडारण की क्षमता नहीं बची। ऐसे में उसे अपने तेल कुओं को बंद करना पड़ सकता है। इसके नतीजे में उन्हें स्थायी रूप से नुकसान पहुंच सकता है। शायद इसी कारण ईरान ने पाकिस्तान के जरिये अमेरिका को नया प्रस्ताव भेजा, लेकिन वह ट्रंप को रास नहीं आया। देखना है कि इसके बाद ईरान क्या करता है और ट्रंप क्या करते हैं? यदि ईरान परमाणु मसले पर समझौते से इन्कार करता रहता है तो ट्रंप उसे नए सिरे से निशाना बना सकते हैं, लेकिन उनके लिए ऐसा करना आसान नहीं होगा, क्योंकि पश्चिम एशिया संकट को लेकर वे अपने घर में ही आलोचना से घिर गए हैं। उनके रक्षा मंत्री विपक्षी डेमोक्रेट सांसदों को यह बता पाने में नाकाम हैं कि ईरान के खिलाफ चले 40 दिन के युद्ध में अमेरिका को क्या हासिल हुआ? अमेरिका और ईरान के बीच पहले दौर की वार्ता विफल होने और दूसरे दौर की वार्ता कराने में पाकिस्तान के नाकाम हो जाने के बाद अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने संकट सुलझाने के लिए रूसी राष्ट्रपति पुतिन से बात की, लेकिन इससे भी बात बनती नहीं दिखी। इस बातचीत में रूस ने ईरान के संवर्धित यूरेनियम को अपने पास रखने का प्रस्ताव दिया, लेकिन इस पर बात तभी आगे बढ़ सकेगी, जब ईरान सहमत होगा।

आज यक्ष प्रश्न यह नहीं है कि अमेरिका और ईरान के बीच युद्धविराम कायम रहेगा या नहीं, बल्कि यह है कि होर्मुज समुद्री मार्ग खुलेगा या नहीं? यदि यह समुद्री मार्ग नहीं खुलता तो तेल और गैस के दाम नीचे आने वाले नहीं और यदि वे इसी तरह बढ़ते रहे तो पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था डगमगा सकती है। कई देशों में तो तेल और गैस के दाम बढ़ भी गए हैं। इसका प्रतिकूल असर उद्योग-धंधों के साथ रोजगार पर भी पड़ रहा है। अभी तक भारत को केवल एलपीजी की किल्लत का सामना करना पड़ रहा है। सरकार को इस किल्लत के बीच कमर्शियल सिलिंडरों के दाम बढ़ाने पड़े हैं। पिछले कुछ समय से कारखानों में इस्तेमाल होने वाली गैस की कमी भी देखी जा रही है और उनका उत्पादन प्रभावित हो रहा है। कहीं-कहीं श्रमिकों के काम के घंटों और दिनों में भी कटौती होने लगी है। एक समस्या यह भी है कि निर्यातक अपना सामान खाड़ी के देश नहीं भेज पा रहे हैं। इसी तरह खाड़ी देशों से तेल और गैस के अलावा अन्य उत्पाद भी नहीं आ पा रहे हैं। इसका भी असर उद्योगों पर पड़ रहा है।

जहां तेल के दाम 125 डॉलर प्रति बैरल को पार कर गए हैं, वहीं रुपया डॉलर के मुकाबले 95 के स्तर को लांघ गया है। यह भारत के लिए दोहरा संकट है, क्योंकि इससे आयात बिल बढ़ रहे हैं। कच्चे तेल के बढ़ते मूल्यों और रुपये में गिरावट से महंगाई बढ़ने का खतरा है। अब तो इसकी भी आशंका है कि तेल कंपनियों को अपना घाटा कम करने के लिए पेट्रोल और डीजल के दाम भी बढ़ाने पड़ सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो महंगाई का तेजी से बढ़ना तय है। महंगाई बढ़ने से आम आदमी के समक्ष संकट तो बढ़ेगा ही, सरकार के लिए भी मुश्किलें बढ़ जाएंगी। सरकार कुछ भी दावा करे, उसके लिए बहुत दिनों तक पेट्रोल और डीजल के मूल्य स्थिर रखना कठिन होगा। यह ध्यान रहे कि कच्चे तेल के बढ़े दामों के बोझ से आम आदमी को बचाने के लिए सरकार पहले ही अपने टैक्स राजस्व में कटौती कर चुकी है।

इसके तहत पिछले माह पेट्रोल और डीजल, दोनों पर उत्पाद शुल्क में कमी की गई थी, लेकिन आगे उसके लिए ऐसा करना कठिन होगा। सरकार ने अभी तक भले ही पेट्रोल और डीजल के दाम स्थिर रखे हों, लेकिन उसे कमर्शियल सिलिंडर के दाम बढ़ाने के साथ विदेशी अंतरराष्ट्रीय एयरलाइंस के लिए एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) के दाम बढ़ाने पड़े हैं। इसके चलते अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा मंहगी हुई। गत दिवस फिर से एटीएफ के मूल्य बढ़ाए गए। इससे अंतरराष्ट्रीय हवाई यात्रा और महंगी होना तय है। कुछ एयरलाइंस की घरेलू यात्रा भी महंगी हो गई है। स्पष्ट है इसका असर आम लोगों के साथ आर्थिकी पर भी पड़ेगा। ऐसा नहीं है कि केवल गैस की ही किल्लत देखने को मिल रही है। चूंकि उर्वरक उत्पादन में प्राकृतिक गैस का उपयोग होता है, इसलिए उसके भी दाम बढ़ने और उसकी आपूर्ति प्रभावित होने की आशंका है। तारकोल भी पेट्रोलियम रिफाइनिंग का एक उप-उत्पाद है और देश में उसकी भी कमी देखी जा रही है।

यदि अमेरिका और ईरान के बीच तनातनी जारी रहती है और होर्मुज समुद्री मार्ग नहीं खुलता तो पश्चिम एशिया का संकट पूरी दुनिया के लिए कहीं बड़े संकट में तब्दील हो जाएगा। इसके लिए केवल अमेरिका और इजरायल ही नहीं, बल्कि ईरान भी दोषी होगा, क्योंकि अब वह भी हठधर्मिता दिखा रहा है। जहां अमेरिका चाह रहा है कि ईरान अपने यूरेनियम संवर्धन कार्यक्रम को स्थगित करे, वहीं पहले इसी मसले पर अमेरिकी प्रतिनिधियों से बात कर रहे ईरानी नेता अब यह कह रहे हैं कि इस पर कोई समझौता नहीं हो सकता। स्पष्ट है कि ईरान का यह रुख न तो अमेरिका को स्वीकार होगा, न इजरायल को और न ही खाड़ी देशों को।

शांति स्थापना में मीडिया की आध्यात्मिक दृष्टि मददगार

वर्तमान अशांत वैश्विक दौर में ब्रह्माकुमारी मिशन आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से शांति स्थापना के लिए अथक प्रयास कर रहा है। इस मिशन के साथ-साथ मीडिया भी यदि शांति के लिए हो रहे प्रयासों में अपना भरसक योगदान करने लगे तो इस दिशा में विश्व जनमत और मजबूत हो सकता है।

ओम्? शांति। वैसे तो 'ओम' रूपी इस अपार शांति सागर में मेरे विचार गागर में एक बूंद की माफिक होंगे। फिर भी वैश्विक शांति के लिए मीडिया की भूमिका कैसी होनी चाहिए, इस विषय पर अपने अनुभव, अपने विचार और सुझाव रखने का प्रयास कर रहा हूं। तो चलिये, 'नीड ऑफ ग्लोबल पीस, रोल ऑफ मीडिया' के विषय पर चर्चा की शुरुआत कुछ इस तरह से करते हैं :-

कलम उठे तो अमन की कहानी लिखी जाये, हर एक खबर में इंसानियत दिखी जाये।

निस्संदेह, विश्व आज सर्वाधिक अशांत दौर से गुज़र रहा है। चारों तरफ भय और असुरक्षा का माहौल है। व्यक्ति, राष्ट्र से लेकर विश्व स्तर तक स्थिति चिंताजनक बनी हुई है। कोरोना काल से लेकर, यूक्रेन युद्ध और आजकल अमेरिका-इस्त्राइल और ईरान द्वंद्व तक के संघर्ष ने दुनिया के अरबों लोगों के जीवन को अशांत बनाकर रख दिया है। हाल के दशकों में वैश्वीकरण और उदारीकरण के बाद दुनिया को एक वैश्विक गांव बनाने का जो सपना देखा गया था वह ध्वस्त होता नज़र आ रहा है। ऐसे हालात में 'नीड ऑफ ग्लोबल पीस एंड रोल ऑफ मीडिया' विषय आज निश्चित रूप से समय की मांग है।

आज जहां संयुक्त परिवार बिखर कर 'एकल' में सिमटने लगे हैं, दाम्पत्य जीवन में टूटन बढ़ रही है। भागदौड़भरी जिंदगी जी रही युवा पीढ़ी में सहनशीलता, धैर्य का क्षरण हो रहा है। परिवार से लेकर समाज तक और समाज से लेकर देश-विदेश तक मानव मनोविकारों का संत्रास हमारे भाईचारे को, विश्व बंधुत्व के हमारे सपनों को चकनाचूर कर रहा है। सोचा तो यह था कि तकनीकी उन्नति समाज को और देशों को जोड़ने का काम करेगी, लेकिन उलटे दुनिया संघर्षों में उलझी दिखायी पड़ रही है। पूरी दुनिया में युद्ध, मृत्यु, तबाही, विस्थापन और मानवीय विपदाओं का अंतहीन सिलसिला चल निकला है। निस्संदेह ब्रह्माकुमारी मिशन विपदाओं के इस सिलसिले को थामने में आध्यात्मिक चिंतन के माध्यम से अथक प्रयास कर रहा है। इस मिशन के साथ-साथ मीडिया भी शांति के लिए हो रहे प्रयासों में अपना भरसक योगदान करने लगे, अपनी सक्रिय भूमिका निभाने लग जाये तो इस दिशा में विश्व जनमत और मजबूत हो सकता है। पत्रकार युद्ध का सच बताने के साथ-साथ अगर बुद्ध के सच को भी उजागर करें तो यह समूची मानवता के लिये एक कल्याणकारी ऋषिकर्म होगा। संयोग से आज बुद्ध पूर्णिमा भी है, इसके लिए आप सबको बधाई!

इस मंच से उल्लेख जरूरी है कि जिस नारी के महत्व, जिस नारी की शक्ति को आज विश्वभर में पहचान मिलने लगी है। जिस नारी का वंदन करते हुए हमारी देश-प्रदेश की सरकारें 33 प्रतिशत का आरक्षण देने का प्रयास और प्रचार कर रही हैं, उस नारी की शक्ति को, उसके महत्व को ब्रह्माकुमारी मिशन के संस्थापक ब्रह्मतुल्य प्रजापिता ने कई दशक पूर्व आंक लिया था। आपकी इस संस्था में 35 या पचास नहीं, बल्कि शत-प्रतिशत आरक्षण नारी शक्ति के लिये कब का हो चुका। आपके प्रणेता जी ने भारतीय संस्कृति के संदेश : 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' को पहले ही आत्मसात् कर लिया।

शांतिप्रिय बंधुओ, बहनो और भाइयो, इस मंच से मुझे यह बताते हुए भी गर्व का अनुभव हो रहा है कि 'द ट्रिब्यून ट्रस्ट पब्लिकेशन' की हमारी संस्था में भी उच्च पदों पर नारी शक्ति का वर्चस्व है। द ट्रिब्यून की प्रधान संपादक, पंजाबी ट्रिब्यून की संपादक, दैनिक ट्रिब्यून की समाचार संपादक, चंडीगढ़, शिमला और दिल्ली ब्यूरो की प्रमुख के अलावा मानव संसाधन (एचआर) विभाग की प्रमुख भी बहन ही हैं। ट्रिब्यून संस्थान और ब्रह्माकुमारी विवि के मिशन में कई समानताएं भी हैं। ट्रिब्यून की स्थापना करीब 145 साल पहले तत्कालीन अविभाजित भारत के लाहौर में हुई थी और ब्रह्माकुमारी संस्था की स्थापना करीब सौ साल पहले कराची में हुई थी। ट्रिब्यून संस्थान वर्ष 1881 से स्वतंत्रता आंदोलन, जनजागरण, सामाजिक सद्भाव और शांति फैलाने में भी अहम भूमिका निभा रहा है।

तो चलिये विश्व शांति और इसमें मीडिया की भूमिका विषय पर फिर लौटते हैं। परिवारों से लेकर समाज तक और समाज से लेकर विश्व तक को शांति की माला में पिरोने के लिये निश्चय ही मीडिया अहम भूमिका निभा सकता है, विश्व शांति के लिये जनमत तैयार कर सकता है और इस तरह जागरूक हुआ जनमत दुनिया के नीति-नियंताओं से यह सवाल कर सकता है कि आखिर शांति के लिये बनाये गये संगठन अपना फर्ज अदा क्यों नहीं कर पा रहे। कौन सी शक्तियां हैं, जो इन संस्थानों को पंगु बना रही हैं। दुनिया के मठाधीशों से पूछा जाना चाहिये कि वैश्विक भाईचारा और विश्व शांति के उद्देश्य से बनाये गये संगठनों, मसलन- संयुक्त राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, जी-ट्वेंटी, जी-सेवन, ब्रिक्स और क्वाड के होते हुए अमेरिका, रूस जैसी महाशक्तियां, इस्त्राइल और आतंकी शक्तियां मानवता को रौंदने पर क्यों तुली हैं?

अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक सक्रिय मीडिया के मेरे साथियों, उठाओ अपना गांडीव रूपी कलम का अस्त्र, दागो। अरे विश्व शांति के मसीहा का ढोंग रचने वाले महाशक्तिमानो, आप किस हैसियत से नोबेल शांति पुरस्कार पाने की जुगतें भिड़ा रहे हैं। मीडिया के शक्तिमानो जतला दो उन्हें कि कभी न कभी शांति का उजाला उनके झूठ के अंधकार को अवश्य निगल जायेगा। ऐसे हथियार विक्रेताओं को एक शायर की यह आवाज सुना दो :-

'तिरे चराग़ अलग हों मिरे चराग़ अलग,
मगर उजाला तो फिर भी जुदा नहीं होता।'

मीडिया के मेरे दोस्तो, यह सच्चाई हमें माननी पड़ेगी कि सूचना की गति भले तेज हुई है, मगर संवेदना की गहराई कम हो रही है।

शोर का न ओर-छोर

यूं तो हाल के वर्षों में आम भारतीय की अभिव्यक्ति में तल्खी व शोर का ग्राफ तेज हुआ है। अभिव्यक्ति का मुखर होना अच्छा है लेकिन उसका तल्ख होना, किसी की भी सेहत के लिए अच्छा नहीं है। वैसे हमारे परिवेश में लगातार बढ़ता शोर झेलना हमारी नियति हो चला है। सड़कों पर वाहनों के शोर, नये दौर के कर्कश संगीत से लेकर राजनीतिक विमर्श में होने वाले शोरगुल वाले संवाद से लेकर तमाम ऐसा कुछ घट रहा है, जो हमारी परेशानी का सबब बन रहा है। यूं तो कोई प्रमाणिक राष्ट्रव्यापी वैज्ञानिक शोध व्यापक रूप में हमारे सामने तो नहीं आए हैं जो ठीक-ठीक बताएं कि ध्वनि प्रदूषण हमारी सेहत पर कितना घातक असर डाल रहा है। लेकिन गाहे-बगाहे सामने आए आंकड़े इस बात की पुष्टि जरूर करते हैं कि लगातार बढ़ता शोर हमारी सेहत बिगाड़ रहा है। लेकिन इसके बावजूद इसे रोकने के लिए उचित निगरानी, समयबद्ध कार्रवाई और दंड के प्रावधान लागू होते नजर नहीं आते हैं। लेकिन विभिन्न अध्ययनों के निष्कर्ष बता रहे हैं देश के महानगरों से लेकर कस्बों तक हमारे परिवेश का शोर तय मानकों से कहीं अधिक है। जाहिरा तौर ये शोर हमारी सेहत को गहरे तक प्रभावित कर रहा है। जिससे न केवल हमारी श्रवण शक्ति कमजोर हो रही है बल्कि नींद में कमी, मानसिक तनाव, उच्च रक्तचाप के अलावा हृदय रोग तक का खतरा बढ़ रहा है। लेकिन इस दिशा में कागजों में तो लुभावनी योजनाएं तो बनायी जाती हैं लेकिन जमीनी हकीकत बदलती नजर नहीं आती। यह सुखद है कि पिछले दिनों देश की राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में इस दिशा में नई पहल शुरू की गई है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति ने ध्वनि प्रदूषण नियंत्रण के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया आरंभ की है। दावा किया जा रहा है कि प्रदूषण के स्रोतों की कायदे से निगरानी होगी। इसके अलावा समयबद्ध ढंग से कार्रवाई होगी। साथ ही जुर्माना भी अनिवार्य रूप से वसूला जाएगा। ये तो आने वाला वक्त बताएगा कि अच्छी योजना कितनी जमीनी हकीकत बनती है।

लेकिन सवाल यह है कि जब देश में पहले से शोर नियंत्रण के कानून मौजूद हैं और हमारी अदालतें भी समय-समय पर हमारे नीति नियंताओं को आगाह करती ही रहती हैं, तो फिर सूरत क्यों नहीं बदलती। आखिर इन नियम-कानूनों के क्रियान्वयन में कहां खोट रह जाता है। यहां यह उल्लेखनीय है कि ध्वनि प्रदूषण विनियमन और नियंत्रण नियम, 2000 के तहत ध्वनि विस्तारक यंत्रों, निर्माण कार्यों और उद्योगों में इस्तेमाल की जाने वाली मशीनों, वाहनों के हार्न आदि अन्य स्रोतों को नियंत्रित करने का प्रयास किया गया था। ताकि लोगों के स्वास्थ्य और पर्यावरण की रक्षा हो पाए। उल्लेखनीय है कि ये प्रावधान दिन व रात के लिये अलग-अलग हैं।

शिक्षकों के बिना शिक्षा, करीब दस लाख पद खाली

का ह निराशाजनक है कि राज्यों में शिक्षकों के रिक्त पदों को लेकर शिक्षा मंत्रालय की संसदीय समिति को फिर से चिंता जतानी पड़ी। इस समिति ने पिछले वर्ष भी स्कूली शिक्षकों के खाली पड़े पदों पर चिंता जताते हुए उन्हें इस वर्ष मार्च तक भरने की आवश्यकता पर बल दिया था, लेकिन उस पर ध्यान नहीं दिया गया और इसीलिए अब इस समिति ने शिक्षकों के खाली पद भरने में देरी करने वाले राज्यों की वित्तीय मदद रोकने का सुझाव दिया है। समिति के अनुसार जब तक राज्य शिक्षकों के खाली पद नहीं भरते, तब तक उन्हें समग्र शिक्षा अभियान के तहत प्रदान की जाने वाली वित्तीय मदद न दी जाए।

यदि ऐसा किया जाता है तो यह भी संभव है कि राज्य वित्तीय सहायता के अभाव में रिक्त शिक्षकों के पद भरने में और अधिक सुस्ती दिखाएं। यह ध्यान रहे कि संसदीय समिति की तरह से शिक्षा मंत्रालय भी राज्यों से शिक्षकों के रिक्त पदों को प्राथमिकता के आधार पर भरने का आग्रह कर चुका है, लेकिन नतीजा ढाक के तीन पात वाला है। यह सामान्य बात नहीं कि राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में शिक्षकों के करीब दस लाख पद खाली पड़े हैं। इनमें लगभग साढ़े सात लाख पद प्राथमिक शिक्षकों के है। इसका अर्थ है कि शिक्षा की बुनियाद ही कमजोर की जा रही है।

यह एक विडंबना ही है कि शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने में पिछले कई वर्षों से ढिलाई बरती जा रही है। यह ढिलाई यही बताती है कि राज्य सरकारें स्कूली शिक्षा की दशा-दिशा सुधारने के प्रति गंभीर नहीं। उनकी इस अगंभीरता का परिचय उन सर्वेक्षणों से मिलता है, जो प्राथमिक शिक्षा की दयनीय दशा को रेखांकित करते रहते हैं। ये सर्वेक्षण यह बताते रहे हैं कि किस तरह चौथी-पांचवीं के छात्रों को सामान्य जोड़-घटाव करने में कठिनाई होती है या फिर वे दो-तीन वाक्य भी सही तरह नहीं लिख पाते।

यह ठीक नहीं कि राज्य सरकारें समग्र शिक्षा अभियान के तहत स्कूली शिक्षा को सशक्त बनाने के लिए वित्तीय मदद तो लें, पर शिक्षकों के रिक्त पद भरने में आनाकानी करें। यह विचित्र है कि जो काम प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए, वही एजेंडे से बाहर दिखता है। इसका प्रमाण यह है कि कुछ राज्यों में कई वर्षों से बड़ी संख्या में शिक्षकों के पद खाली बने हुए हैं।

विशेष आलेख /राशिफल

पर्यावरण संरक्षण राष्ट्रीय सुरक्षा का अभिन्न हिस्सा बने

भारत में बढ़ती गर्मी और जलवायु परिवर्तन एक गहरी पारिस्थितिकीय समस्या को उजागर करते हैं, जो मानव-निर्मित हैं। विकास योजनाओं और पर्यावरणीय लापरवाही ने प्राकृतिक संतुलन को बिगाड़ दिया है।

भारत में मौसम का बदलता मिजाज और वैशाख के महीने में जेठ जैसी तपिश का अहसास होना अब केवल एक प्राकृतिक घटना नहीं, बल्कि एक गहरे पारिस्थितिक संकट की चेतावनी है। अक्सर भीषण गर्मी और लू के लिए अल नीनो या वैश्विक जलवायु परिवर्तन को दोष देकर हम अपनी जिम्मेदारी से बचते रहे हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि यह संकट काफी हद तक मानव-निर्मित है।

आज हम जिस भीषण गर्मी का सामना कर रहे हैं, वह वैश्विक वायुमंडलीय बदलावों और स्थानीय स्तर पर पर्यावरण के प्रति बरती गई नीतिगत लापरवाही का एक मिला-जुला परिणाम है। जब हम अपनी विकास योजनाओं के नाम पर हज़ारों हेक्टेयर प्राथमिक जंगलों, पहाड़ियों और जल निकायों को नष्ट करते हैं, तो हम अनजाने में उन प्राकृतिक 'कूलिंग एजेंटों' को खत्म कर देते हैं जो इस तपिश के खिलाफ हमारी एकमात्र सुरक्षा थे। बुंदेलखंड जैसे क्षेत्रों में, जहां तापमान अब नियमित रूप से 48 डिग्री सेल्सियस के स्तर को छूने लगा है, यह स्पष्ट है कि हमारी विकास की भूख ने धरती के प्राकृतिक थर्मोस्टेट को बिगाड़ दिया है।

इस मानव-निर्मित गर्मी की सबसे प्रत्यक्ष और क्रूर मार उन मजदूरों और सड़क किनारे काम करने वाले श्रमिकों पर पड़ती है जो इस ढांचे का निर्माण कर रहे हैं। भारत के करोड़ों निर्माण श्रमिक, रेहड़ी-पटरी वाले और गिग-इकोनॉमी के कर्मचारी इस गर्मी को केवल एक आंकड़े के रूप में नहीं, बल्कि एक शारीरिक हमले के रूप में महसूस करते हैं। आंकड़ों के अनुसार, गर्मी के कारण भारत को 2030 तक अपने कुल कामकाजी घंटों का 5.8 प्रतिशत हिस्सा खोना पड़ सकता है, जो लगभग 3.4 करोड़ पूर्णकालिक नौकरियों के बराबर है। बांदा जैसे शहरों में, कंक्रीट और कोलतार की सड़कें गर्मी को सोखकर रात में भी उसे वापस छोड़ती हैं, जिससे 'अर्बन हीट आइलैंड' प्रभाव पैदा होता है और स्थानीय तापमान ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में 5 डिग्री सेल्सियस से 7 डिग्री सेल्सियस तक अधिक बना रहता है। नीतिगत स्तर पर मजदूरों के लिए 'छाया का अधिकार' या लू के दौरान काम के घंटों में बदलाव जैसे नियम केवल कागजों तक सीमित हैं, जो हमारे विकास के उस अंधेपन को दर्शाते हैं जहां श्रम को एक जैविक इकाई के बजाय केवल एक मशीन समझा जाता है। गर्मी का यह घातक रूप हमारी खेती और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की कमर तोड़ रहा है। 'थर्मल शॉक' के कारण गेहूं जैसी प्रमुख फसलों के दाने दूध भरने की अवस्था में ही सूख रहे हैं, जिससे पैदावार में 15 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक की गिरावट दर्ज की जा रही है। मिट्टी की नमी खत्म होने से उपजाऊ जमीन अब मरुस्थल में बदल रही है, फिर भी हमारी नीतियां सूखे क्षेत्रों में अधिक पानी चाहने वाली फसलों को बढ़ावा दे रही हैं। इसी तरह, जंगलों के विखंडन और अवैध खनन ने वन्यजीवों के लिए भोजन का संकट पैदा कर दिया है। छतरपुर और पन्ना टाइगर रिजर्व के आसपास के इलाकों में, खनन के कारण प्राकृतिक जल स्रोत सूख चुके हैं, जिसके परिणामस्वरूप जंगली जानवरों का बस्तियों की ओर आना 40 प्रतिशत तक बढ़ गया है। यह केवल मानव-पशु संघर्ष नहीं है, बल्कि उस पारिस्थितिक सुरक्षा चक्र का टूटना है जो इंसानों और जानवरों को एक साथ सुरक्षित रखता था।

वर्तमान 'हीट एक्शन प्लान' (एचएपी) की सबसे बड़ी विफलता यह है कि वे केवल शहरों में मौतों को रोकने पर केंद्रित हैं, जबकि जमीन, जल और मिट्टी के गिरते स्वास्थ्य की अनदेखी करते हैं। अब समय आ गया है कि नीतिगत स्तर पर 'वन हेल्थ' के दृष्टिकोण को अपनाया जाए, जहां मिट्टी की नमी, पशुधन का स्वास्थ्य और वन्यजीवों का संरक्षण एक ही इकाई के रूप में देखा जाए। हमें केवल पौधारोपण की रस्म अदायगी से ऊपर उठकर बुंदेलखंड के चंदेलकालीन तालाबों जैसे पारंपरिक जल-प्रबंधन तंत्र को पुनर्जीवित करना होगा। ये तालाब केवल पानी का स्रोत नहीं थे, बल्कि वे स्थानीय पारिस्थितिकी को ठंडा रखने के विकेंद्रीकृत साधन थे। नीति-निर्माताओं को यह समझना होगा कि राजमार्गों के लिए काटे गए पेड़ केवल लकड़ी नहीं थे, बल्कि वे उस सूक्ष्म-जलवायु का हिस्सा थे जो फसलों को झुलसने से बचाती थी।

हमें विकास की अपनी परिभाषा को बदलना होगा। बुंदेलखंड में पत्थर खनन के लिए काटी गई हर पहाड़ी और उत्तराखंड में कंक्रीट के विस्तार के लिए नष्ट की गई हरियाली हमारे भविष्य की ठंडी हवाओं को रोक रही है। आर्थिक लाभ की तुलना में गर्मी के कारण होने वाला स्वास्थ्य और कृषि का नुकसान कहीं अधिक है। भविष्य की नीतियों की सफलता अब इस जवाबदेही पर टिकी है कि हम बुनियादी ढांचे के निर्माण में 'ग्रीन इंजीनियरिंग' को कितनी प्राथमिकता देते हैं और पर्यावरण नियमों की अनदेखी को कब बंद करते हैं।

क्या कहते है आपके सितारें....?

मेष आज इगो के कारण किसी से बातचीत में मनमुटाव हो सकता है। शारीरिक थकान और मानसिक तनाव अधिक रहेगा। मित्रों के साथ किसी बात विवाद हो सकता है।

सिंह आपका आज का दिन शुभफलदायी है। इनकम में भी वृद्धि हो सकती है। मित्रों से लाभ होगा और उनके पीछे धन खर्च भी हो सकता है। पर्यटन स्थल की सैर आपको रोमांचित करेगी।

धनु आप में आज आत्मविश्वास कूट-कूटकर भरा रहेगा। किसी भी काम को करने के लिए आप जल्दबाज़ी में निर्णय ले सकते हैं। पिता तथा बड़ों की ओर से लाभ होगा।

वृषभ नेगेटिव विचारों से मन परेशान रह सकता है। मानसिक रूप से स्वस्थता का अनुभव नहीं करेंगे। निराशा और असंतोष की भावना से काम में मन नहीं लगेगा।

कन्या नई योजना का आरंभ करने के लिए आज अनुकूल दिन है। सरकारी काम में लाभ होगा। अधिकारियों से काम का उचित फल भी मिल सकता है। भाई-बंधुओं के साथ कोई झगड़ा दूर होगा।

मकर आज आप किसी भी कार्य को दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास के साथ करेंगे। उसमें सफलता भी प्राप्त भी करेंगे। पिता की ओर से आपको लाभ हो सकता है।

मिथुन आपको उग्र स्वभाव पर संयम रखने की सलाह दी जाती है। आज आप मानसिकरूप से थकान का अनुभव करेंगे। अधिक परिश्रम की तुलना में कम फल की प्राप्ति होगी।

तुला आज का दिन आपके लिए अच्छा होगा। व्यापार स्थल पर वातावरण अनुकूल रहेगा। उच्च अधिकारी आप पर प्रसन्न रहेंगे। आप का हर काम आज सफलता से पूरा होगा।

कुंभ आज आपका स्वास्थ्य नरम-गरम रह सकता है। शारीरिक रूप से आलस्य और अशक्ति का अनुभव करेंगे। मन में चिंता रह सकती है। व्यापार में बाधाएं उपस्थित होंगी।

कर्क रोमांस के लिए आज अनुकूल दिन है। आज का हर कार्य आप दृढ़ मनोबल और आत्मविश्वास से पूरा करेंगे। प्रवास-पर्यटन की संभावनाएं है।

वृश्चिक आज अचानक धन खर्च होने का योग है। यह खर्च स्वास्थ्य के कारण भी हो सकता है। व्यावहारिक या सामाजिक काम के लिए बाहर जाना हो सकता है। खान-पान में ध्यान रखें।

मीन आज का दिन आपके लिए शुभ रहेगा। आज आपके मनोबल और आत्मविश्वास में दृढ़ता का अनुभव होगा। शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। घर में सुख-शांति का वातावरण रहेगा।

आयुष्मान खुराना ने केरल में शुरू की थ्रिलर फिल्म की शूटिंग?

कॉमेडी फिल्मों के बाद अब आयुष्मान खुराना गंभीर भूमिका में वापसी कर रहे हैं। इस फिल्म का निर्देशन 'काला पानी' फेम समीर सक्सेना कर रहे हैं। फिल्म यश राज फिल्म्स और पोशम पा पिक्चर्स द्वारा बनाई जा रही है।

कब शूरू हुई फिल्म की शूटिंग

आयुष्मान की इस फिल्म की शूटिंग अप्रैल की शुरुआत में चुपचाप शुरू हो गई थी। पूरी शूटिंग मई के अंत तक खत्म होने की उम्मीद है। अभी फिल्म का नाम तय नहीं हुआ है। कहानी को गुप्त रखा गया है, लेकिन कथित तौर पर इस फिल्म में आयुष्मान एक आम आदमी की भूमिका निभा रहे हैं, जो अचानक एक खतरनाक और मुश्किल स्थिति में फंस जाता है। इस फिल्म में ज्यादातर सहायक कलाकार नए या कम जाने-माने हैं, जिससे कहानी ज्यादा यथार्थवादी लगेगी।

यश राज के साथ तीसरी फिल्म

यह आयुष्मान खुराना की यश राज फिल्म्स के साथ तीसरी फिल्म है। पहले वे 'दम लगा के हैशा' और 'मेरी प्यारी बिंदू' में काम कर चुके हैं। पोशम पा पिक्चर्स के लिए भी यह थिएटर रिलीज की पहली फिल्म है। पहले उन्होंने नेटफ्लिक्स पर 'मामला लीगल है' और 'होम शांति' जैसी फिल्में बनाई हैं।

आयुष्मान की आने वाली फिल्में

आयुष्मान खुराना इस साल काफी व्यस्त रहने वाले हैं। उनकी 'पति पत्नी और वो दो', 'उड़ता तीर' (सारा अली खान के साथ) और सूरज बड़जात्या की फिल्म 'ये प्रेम मोल लिया' भी रिलीज होने वाली हैं। यह तीनों ही फिल्में इस साल 2026 या फिर अगले साल 2027 में रिलीज होंगी।

अहमद खान की अनटाइटल्ड जॉम्बी एंटरटेनर में हुई शनाया कपूर की एंट्री

निर्देशक अहमद खान इन दिनों अपनी आगामी फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। इस फिल्म के बाद अहमद एक जॉम्बी कॉमेडी फिल्म पर काम करेंगे। इस फिल्म में टाइगर श्रॉफ लीड हीरो के रोल में नजर आएंगे और उनके अपोजिट इस बॉलीवुड अभिनेत्री की एंट्री हो चुकी है।

कौन होगी इस फिल्म में टाइगर की हीरोइन

इस जॉम्बी कॉमेडी फिल्म का निर्देशन अहमद खान करेंगे। फिल्म के निर्माता फिरोज नाडियाडवाला है। टाइगर श्रॉफ इस प्रोजेक्ट से जुड़ चुके हैं। अब मुख्य अभिनेत्री के तौर पर शनाया कपूर का नाम सामने आया है। हालांकि, फिल्म को लेकर अभी तक कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है। फिल्म की बाकी डिटेल्स को अभी गुप्त रखा गया है। शनाया कपूर ने अपने करियर की शुरुआत फिल्म 'आंखों की गुस्ताखियां' से की थी। उसके बाद उन्होंने आदर्श गौरव के साथ सर्वाइवल थ्रिलर फिल्म 'तू या मैं' की है, जिसमें उनकी एक्टिंग की काफी तारीफ हुई। अब वह अपने आगामी प्रोजेक्ट्स पर काम कर रही हैं। वहीं, टाइगर श्रॉफ अभी फिल्म 'लग जा गले' की शूटिंग कर रहे हैं। इस फिल्म में उनके साथ जान्हवी कपूर और लक्ष्य मुख्य भूमिका में हैं। यह फिल्म धर्मा प्रोडक्शन्स के बैनर तले बन रही है।

अहमद खान की फिल्म 'वेलकम टू द जंगल'

अहमद खान निर्देशित फिल्म 'वेलकम टू द जंगल' में 30 से ज्यादा बड़े कलाकार काम कर रहे हैं। इसमें अक्षय कुमार, सुनील शेट्टी, जैकी श्रॉफ, रवीना टंडन, दिशा पाटनी, जैकलीन फर्नांडीज, अरशद वारसी, परेश रावल, राजपाल यादव, जॉनी लीवर और कई कलाकाल शामिल हैं। अहमद खान ने बताया कि इतनी बड़ी कास्ट को एक साथ मैनेज करना बहुत मुश्किल था। अभिनेताओं की डेट्स, बजट और बाकी जरूरतों को संभालना आसान नहीं रहा। फिर भी उन्होंने यह फिल्म पूरी की।

बंद होगा एकता कपूर का 'नागिन 7'

टीवी की क्वीन कही जाने वाली निर्माता एकता कपूर ने अपने हिट सुपरनेचुरल शो नागिन 7 को लेकर एक अहम अपडेट साझा किया है। उन्होंने पुष्टि की है कि मौजूदा सीजन जल्द ही समाप्त होने वाला है और अगले साल इसे फिर से शुरू करने की योजना है। एकता कपूर ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज में शो के भविष्य को लेकर चल रही अटकलों पर बात करते हुए स्पष्ट किया कि सीजन को समाप्त करने का फैसला आंशिक रूप से शेड्यूलिंग की वजह से लिया गया है। उन्होंने कहा, 'नागिन को लेकर कुछ अपडेट देने आई हूं। दोस्तों, मैंने कल एक पोस्ट किया था और मुझे एहसास नहीं था कि हम अचानक शो खत्म करने वाले हैं। लेकिन हां, चैनल के अनुरोध के कारण हमें अप्रैल में शो खत्म करना था। अब हम इसे मेरे जन्मदिन पर खत्म कर रहे हैं। नागिन के किसी भी सीजन की ऐसी योजना नहीं थी। यह सिर्फ 30 एपिसोड का होना था। लेकिन हमने इसे 48 एपिसोड तक बढ़ा दिया और फिर हम अगले साल वापस आएंगे।'

एकता ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक और वीडियो भी साझा किया। इसमें उन्होंने छोटे सीजन बनाने के अपने फैसले के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा, 'नागिन को हर साल प्रसारित करने के लिए हमें छोटे सीजन बनाने चाहिए ताकि मुझे अपना सारा समय न देना पड़े और मैं बाकी कामों पर ध्यान दे सकूं। 'नागिन 7' का फिनाले एपिसोड अब 7 जून को टेलीकास्ट होगा। मौजूदा सीजन में प्रियंका चाहर चौधरी मुख्य भूमिका में हैं।

सुपर कॉप के रोल में फिर तबाही मचाएंगे रणदीप हुड्डा

रणदीप हुड्डा स्टारर सीरीज 'इंस्पेक्टर अविनाश' का पहला सीजन 2023 में आया था। इसके बाद से ही फैंस इसके दूसरे पार्ट का इंतजार कर रहे थे। अब मेकर्स ने इसके दूसरे सीजन का टीजर रिलीज कर फैंस की धड़कनें और बढ़ा दी हैं।

क्या है टीजर में खास

टीजर में रणदीप हुड्डा दबंग इंस्पेक्टर के रूप में नजर आ रहे हैं। कुछ सीन में वे बहरूपिया भी बनते दिखाई दिए हैं। टीजर में काफी दमदार डायलोग्स बताए गए हैं। इनमें से एक है जिसमें रणदीप हुड्डा कहते हैं- 'जिंदगी और मृत्यु के बीच सिर्फ हमारी एक उंगली का फर्क है।' वहीं टीजर में कुछ इंटेंस सीन भी नजर आए हैं, जिनमें एक्टर दमदार एक्शन सीन करते नजर आए हैं। वीडियो के कैप्शन में लिखा- 'यूपी का महाकाल, इस्पेक्टर अविनाश वापस आ रहे हैं। और इस बार होगा असली तांडव।'

कब रिलीज होगी सीरीज

सीरीज में रणदीप के अलावा उर्वशी रौतेला, रजनीश दुग्गल, अमित सियाल, सरगम सिंह, शालीन भनोट अहम किरदार में नजर आएंगे। सीरीज का निर्देशन नीरज पाठक कर रहे हैं। फिलहाल मेकर्स ने इसकी रिलीज डेट का खुलासा नहीं किया है। सीरीज पिछले पार्ट से ज्यादा एक्शन पैक और इंटेंस बताई जा रही है। मेकर्स ने सीरीज के दूसरे सीजन 'इंस्पेक्टर अविनाश' का टीजर रिलीज कर दिया है। ये सीरीज हॉटस्टार पर स्ट्रीम होगी।

क्या साथ काम करेंगे अहान और आर्यन?

अहान पांडे ने फिल्म 'सैयारा' से बॉलीवुड में बतौर अभिनेता डेब्यू किया। वहीं शाहरुख के बेटे और निर्देशक आर्यन खान ने 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' से निर्देशन में कदम रखा। क्या आर्यन खान की आने वाली किसी फिल्म में अहान पांडे काम कर सकते हैं? अहान पांडे और शाहरुख खान के बेटे आर्यन खान, दोनों ने साल 2025 में मनोरंजन की दुनिया में कदम रखा। जहां अहान ने फिल्म 'सैयारा' से बतौर अभिनेता अपना धमाकेदार डेब्यू किया। वहीं आर्यन ने नेटफ्लिक्स सीरीज 'द बैड्स ऑफ बॉलीवुड' के जरिए निर्देशन में सफलता हासिल की। तो क्या अब दोनों एक साथ काम करेंगे?

बचपन की यादें और गहरा रिश्ता

हाल ही में एक इंटरव्यू में अहान ने आर्यन के साथ अपने खास रिश्ते के बारे में खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि वे बचपन के दोस्त हैं। अहान ने एक मजेदार किस्सा भी शेयर किया। दरअसल, आर्यन स्कूल से सीधे अहान के घर आ जाते थे। वह अपने माता-पिता (शाहरुख और गौरी खान) से मिलने से पहले अहान के घर वक्त बिताते थे। हालात, ऐसी थी कि खुद शाहरुख खान अहान को फोन करके पूछते थे कि आर्यन घर क्यों नहीं आए? जब अहान से पूछा गया कि क्या वह भविष्य में आर्यन के निर्देशन में काम करेंगे, तो उन्होंने कहा, 'वे दोनों एक बेहतरीन निर्देशक-अभिनेता की जोड़ी बन सकते हैं। अहान का मानना है कि उनके बीच एक 'वास्तविक बंधन' है, इसलिए साथ काम करना काम जैसा नहीं लगेगा। बचपन की दोस्ती की वजह से दोनों एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह समझते हैं।

अहान के प्रोजेक्ट्स

अपनी पहली फिल्म 'सैयारा' की बड़ी सफलता के बाद, अहान के पास कई बड़े प्रोजेक्ट्स हैं। 'सैयारा' के बाद अहान पांडे एक बार फिर से मोहित सूरी की अगली फिल्म में काम करेंगे। इस रोमांटिक ड्रामा फिल्म में अहान के साथ अनीत पड्डा नजर आएंगी। इसे यशराज फिल्म्स बना रहा है। इसके अलावा अहान निर्देशक अली अब्बास जफर के साथ भी एक फिल्म में काम कर रहे हैं। यह एक एक्शन-रोमांस ड्रामा फिल्म होगी।

सारा अर्जुन की लगी लॉटरी

'धुरंधर' और 'धुरंधर 2' में यलीना के रोल से छाईं सारा अर्जुन अब मधुबाला बनेंगी। खबर है कि उन्हें मधुबाला की बायोपिक के लिए साइन किया गया है। नाम कन्फर्म है और एक्ट्रेस ने तैयारी भी शुरू कर दी है। हालांकि, अभी आधिकारिक ऐलान बाकी है।

हिंदी सिनेमा की सबसे खूबसूरत एक्ट्रेस मानी जाने वालीं मधुबाला की बायोपिक की चर्चा कई साल से हो रही है। इसके लिए कई एक्ट्रेसेस के नाम सामने आए, पर किसी पर भी मुहर नहीं लगी। अब इसके लिए 'धुरंधर' की यलीना यानी सारा अर्जुन का नाम कन्फर्म बताया जा रहा है। यानी उनकी लॉटरी लग गई है। कहा जा रहा है कि वह मधुबाला पर बन रही बायोपिक में उनका किरदार निभाएंगी। उनका नाम मधुबाला की बायोपिक के लिए कन्फर्म है। इस बायोपिक को जसमीत के रीन डायरेक्ट करेंगी, जबकि संजय लीला भंसाली प्रोड्यूसर हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, मधुबाला की बायोपिक की शूटिंग जुलाई 2026 से शुरू होगी। 'धुरंधर' और 'धुरंधर 2' के बाद इसे सारा अर्जुन के करियर की अहम फिल्म माना जा रहा है, जो उनके करियर को एक नई दिशा देगी। सारा अर्जुन वैसे तो बचपन से फिल्मों में काम कर रही हैं, पर 'धुरंधर' ने उन्हें रातोंरात जबरदस्त स्टारडम दिलाया है।

इस कारण मधुबाला की बायोपिक में हुई देरी

मधुबाला की बायोपिक की बात करें, तो यह कई साल से अटकी हुई थी। रिपोर्ट के मुताबिक, बजट की कमी के कारण इसे कई बार देरी का सामना करना पड़ा, लेकिन बाद में यह ट्रैक पर लौट आई। अहम मोड़ तब आया जब संजय लीला भंसाली बतौर प्रोड्यूसर मधुबाला की बायोपिक से जुड़े। वहीं जसमीत के रीन डायरेक्टर हैं, जिन्होंने विजय वर्मा और आलिया भट्ट स्टारर 'डार्लिंग्स' डायरेक्ट की थी।

सारा ने शुरू की तैयारी

बताया जा रहा है कि सारा अर्जुन ने मधुबाला की खूबसूरती, गरिमा और पर्दे पर उनकी उपस्थिति को हूबहू उतारने के लिए जोरदार तैयारी शुरू कर दी है। अब दिलीप कुमार और किशोर कुमार के किरदारों के लिए कास्टिंग चल रही है, जिनका मधुबाला की निजी जिंदगी में अहम रोल रहा।

इन एक्ट्रेसेस के नामों की थी चर्चा

मालूम हो कि मधुबाला के किरदार के लिए पहले कियारा आडवाणी से बातचीत चल रही थी, पर बात नहीं बन पाई और फिर सारा अर्जुन को साइन किया गया। इससे पहले मधुबाला के किरदार के लिए साई पल्लवी और अनीत पड्डा का नाम भी सामने आया, पर वो महज अफवाह निकली। मधुबाला की बायोपिक में उनके करियर और निजी जिंदगी के कई अहम पहलुओं को दिखाया जाएगा। उन पलों को भी दर्शकों को देखने का मौका मिला, जिनसे वो अछूते हैं।

मनीष मल्होत्रा भी बनाने वाले थे मधुबाला पर बायोपिक

मधुबाला पर बायोपिक बनाने के लिए फैशन डिजाइनर मनीष मल्होत्रा का भी नाम सामने आया था, पर दिवंगत एक्ट्रेस की बहन मधुर भूषण ने 2022 में कह दिया था कि मधुबाला की जिंदगी पर फिल्म सिर्फ वो और उनकी टीम ही बनाएगी, बाकी कोई और नहीं बनाएगा।

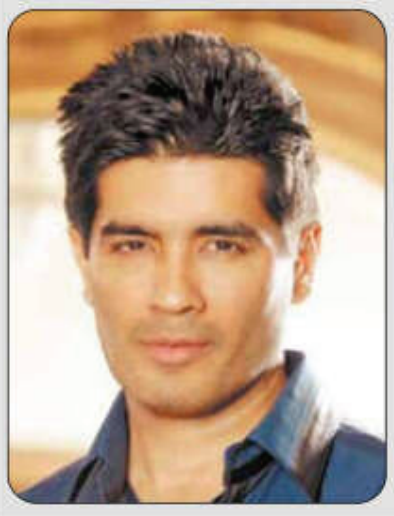

फिल्मों में नायक, अब असल जिंदगी में 'जननायक'

तमिलनाडु में विजय आंधी

रील लाइफ से रियल लाइफ के मुकाम बुनने तक का सफर किसी फिल्म कहानी की पटकथा से नहीं कम, दो साल पहले बनाई पार्टी, पहले चुनाव में ही प्रचंड जीत

मनोहरसिंह खोखर। जयपुर

थलापति विजय की पार्टी तमिलगा वेत्री कझगम की यह जीत वाकई किसी सुपरहिट फ़िल्म के क्लाइमैक्स जैसी रही। 2026 के तमिलनाडु विधानसभा चुनावों में विजय ने अपनी नई पार्टी के साथ जो करिश्मा दिखाया है, उसने राज्य की 60 साल पुरानी 'द्रविड़ राजनीति' की धुरी को हिलाकर रख दिया है। विजय (थलापति) का 'रील लाइफ' से 'रियल लाइफ' के मुख्यमंत्री बनने तक का सफर और उनके चुनावी वादे किसी फिल्मी पटकथा की तरह ही प्रभावशाली रहे हैं। हालांकि विजय की पार्टी TVK (108 सीटें) बहुमत के जादुई आंकड़े (118) से सिर्फ 10 सीटें दूर है, इसलिए तमिलनाडु में पहली बार गठबंधन सरकार बनने की प्रबल संभावना है। सबसे अधिक चर्चा कांग्रेस के साथ गठबंधन की है। राहुल गांधी ने खुद विजय को फोन कर जीत की बधाई दी है। अगर कांग्रेस DMK का साथ छोड़कर TVK के साथ आती है, तो यह विजय के लिए सबसे बड़ा सहारा होगा। अभी के हालातों में, कांग्रेस और निर्दलीयों का समर्थन ही विजय के लिए मुख्यमंत्री बनने का सबसे आसान रास्ता नजर आ रहा है।

फिल्म की तरह सत्ता में भी हीरो जैसी एंट्री :

एक्टर थलापति विजय की तमिलनाडू में भी एंट्री हीरो की तरह रही। वर्ष 2024 में राजनीतिक पार्टी बनाकर सबको चौकाने वाले को मौजूदा सरकार डीएमके ने कभी गंभीरता से नहीं लिया। हालांकि उनकी चुनावी रैलियों में उमड़ने वाली भीड़ को देखकर बीजेपी ने जरुर गठबंधन की कोशिश की। लेकिन विजय थलापति अपनी धर्मनिरपेक्ष छवि और स्वामी पेरियार एवं डॉ. भीमराव अंबेडकर के संविधान के आधार पर धर्मनिरपेक्षता, सामाजिक न्याय, लोकतंत्र में पूरा भरोसा करते हुए अपने दम पर लड़े। नतीजा सबके सामने है आज। तमिलनाडू में टीवीके सबसे बड़ी पार्टी के तौर पर उभरी और विजय भावी मुख्यमंत्री के तौर पर भी।

सोच से परे का हो गया 'खेला' :

टीवीके की चुनावी सभाओं में जिस तरह से लोगों की भीड़ उमड़ी, उसी तरह से लोगों ने अपने स्टार को वोट देकर उसकी झोली भर दी। जो कांग्रेस गठबंधन डीएमके दूसरी बार सत्ता में आने का दम भर रही थी, उसे करारी हार का सामना करना पड़ा। डीएमके में मुख्यमंत्री एम स्टालिन को भी हार का सामना करना पड़ा। यहां डीएमके लगभग 60 सीटों पर सिमट गई। वहीं भाजपा गठबंधन वाली एआईएडीएमके 50 सीटों पर सिमट गई। खैर बीजेपी यहां पहले दिन से ही सत्ता की लड़ाई में नहीं थी, उसका पूरा फोकस पश्चिम बंगाल पर था। यहां कांग्रेस को ओवर कॉफिंडेंस था। सारे के सारे एक्जिट पोल भी डीएमके के पक्ष में ही नतीजे बता रहे थे।

भारतीय राजनीति के पुराने मिथक को तोड़ा

आम आदमी पार्टी और तमिलगा वेत्री कझगम (TVK) दोनों ने ही भारतीय राजनीति के उस पुराने मिथक को तोड़ा है कि एक नई पार्टी को सत्ता तक पहुँचने में दशकों लग जाते हैं। इन दोनों की सफलता में कुछ हैरान कर देने वाली समानताएँ है। जहाँ 'आप' ने 2012 में गठन के मात्र 1 साल के भीतर दिल्ली में सरकार बना ली थी, वहीं विजय की TVK ने फरवरी 2024 में घोषणा के मात्र 2 साल के भीतर तमिलनाडु की 60 साल पुरानी द्रविड़ राजनीति को हिलाकर 108 सीटें जीत लीं। जिस तरह 2013 में अरविंद केजरीवाल ने तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित को हराया था, ठीक उसी तरह विजय की पार्टी के उम्मीदवार वीएस बाबू ने मौजूदा मुख्यमंत्री एमके स्टालिन को उनके गढ़ कोलाथुर में मात दी। दोनों ही पार्टियों ने खुद को स्थापित 'भ्रष्ट' या 'वंशवादी' पार्टियों के खिलाफ एक 'साफ-सुथरे विकल्प' के रूप में पेश किया। 'आप' ने

भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन का सहारा लिया, तो विजय ने अपनी बेदाग छवि और 'सेक्युलर सोशल जस्टिस' (मदद और न्याय) के विचार को आगे बढ़ाया। दोनों ही पार्टियों की रीढ़ की हड्डी युवा और पहली बार वोट देने वाले मतदाता रहे हैं, जिन्होंने पारंपरिक कैडर-आधारित राजनीति के मुकाबले एक नए नायक को चुना।

पेरियार और अंबेडकर के सिद्धांतों को किया फॉलो :

बीजेपी जहां कट्टर हिंदू वादी विचार धारा पर चल रही थी तो कांग्रेस धर्मनिरपेक्षता की बात करती थी। वहीं विजय थलापति की पार्टी ने 'धर्मनिरपेक्ष सामाजिक न्याय' को मुख्य विचारधारा अपनाई। यह पार्टी खुद को एक केंद्र वामपंथी राजनीतिक दल के रूप में स्थापित करती है। जिसका धर्मनिरपेक्षता , सामाजिक न्याय, समतावाद, और लोकतंत्र में पूरा विश्वास है। स्टार विजय और उनकी पार्टी पेरियार के सामाजिक समानता और तर्कवाद का समर्थन करती है, तो अंबेडकर के संवैधानिक अधिकार और वंचितों के उत्थान, वंचितों की रक्षा और हाशिए पर पड़े लोगों का उत्थान और संवैधानिक नैतिकता की रक्षा करना है। टीवीके ने द्रविड़ राष्ट्रवाद और तमिल राष्ट्रवाद को अलग नहीं मानती, बल्कि इन दोनों के मिश्रण पर चलती है।

बड़े नेताओं और मंत्रियों के किलों को किया ध्वस्त

- **वी.एस. बाबू (कोलाथुर):** इस चुनाव की सबसे बड़ी जीत। उन्होंने मौजूदा मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन को उनके गढ़ कोलाथुर में 8,795 वोटों से हराकर सबको स्तब्ध कर दिया।
- **कमली एस. (अविनाशी):** इन्होंने केंद्रीय राज्य मंत्री और बीजेपी के कद्दावर नेता डॉ. एल. मुरुगन को लगभग 15,000 वोटों से हराया।
- **आर. सबरीनाथन (विरुगमपक्कम):** विजय के ड्राइवर के बेटे सबरीनाथन ने DMK और AIADMK के अनुभवी नेताओं को 22,000 से अधिक वोटों से हराकर यह साबित कर दिया कि यह जीत 'आम आदमी' की जीत है।
- **एम.एल. विजयप्रभु (माधवरम):** इन्होंने DMK के एस. सुधाकरनम को 94,985 वोटों के रिकॉर्ड अंतर से हराया, जो इस चुनाव की सबसे बड़ी मार्जिन वाली जीत में से एक है।
- **के.के. अनंत मोहन (इरोड वेस्ट):** इन्होंने DMK के कद्दावर मंत्री एस. मुथुसामी को 22,250 वोटों से शिकस्त दी।
- **आदव अर्जुना (विल्लिवाक्कम):** 'लॉटरी किंग' सैंटियागो मार्टिन के दामाद आदव ने भी अपनी सीट पर शानदार जीत दर्ज की।
- स्वयं विजय ने भी अपनी दोनों सीटों, पेरम्बूर (53,715 वोट से जीत) और त्रिची ईस्ट (27,416 वोट से जीत), पर भारी अंतर से जीत हासिल कर अपनी लोकप्रियता का लोहा मनवाया है।

सबसे चर्चित चुनावी वादे

* महिलाओं को शादी में 8 ग्राम सोना देना।
* सरकारी अस्पतालों में जन्म लेने वाले प्रत्येक नवजात बच्चे को पार्टी की ओर से सोने की अंगूठी उपहार में देना।

रील लाइफ से रियल लाइफ जैसा राजनीतिक सफर :

विजय ने अपनी फिल्मों (जैसे Sarkar, Mersal) के जरिए सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बोलना शुरू किया था। फरवरी 2024 में उन्होंने तमिलगा वेत्री कझगम (ज्ञ्ङ्क्य) की आधिकारिक घोषणा की। राजनीति के प्रति अपनी गंभीरता दिखाने के लिए उन्होंने अपनी 69वीं फिल्म के बाद अभिनय छोड़ने का साहसिक निर्णय लिया। विल्लुपुरम की विशाल रैली में उन्होंने अपनी विचारधारा को 'सेक्युलर सोशल जस्टिस' बताया, जिसने युवाओं को अपनी ओर खींचा। विजय ने 'द्रविड़ मॉडल' के मुकाबले अपना TVK मॉडल' पेश किया, जिसमें सरकारी स्कूलों और अस्पतालों का कायाकल्प और मुफ्त गुणवत्तापूर्ण शिक्षा। राज्य प्रशासन में पूरी पारदर्शिता लाने का वादा। स्थानीय युवाओं के लिए नौकरियों में प्राथमिकता और नए उद्योग स्थापित करना। तमिलनाडु में नशीले पदार्थों के बढ़ते जाल को पूरी तरह खत्म करने का कड़ा संकल्प। महिलाओं की सुरक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता के लिए विशेष योजनाएं।

'किंगमेकर' की भूमिका निभाएंगे दल

- **कांग्रेस (INC) - 5 सीटें:** यह सबसे निर्णायक शक्ति हो सकती है। अगर कांग्रेस अपने पुराने सहयोगी DMK का साथ छोड़कर विजय को समर्थन देती है, तो TVK बहुमत के बेहद करीब पहुँच जाएगी। राहुल गांधी की विजय को दी गई बधाई इस ओर इशारा कर रही है।
- **PMK (पट्टाली मक्कल कात्ची) - 4-5 सीटें:** उत्तरी तमिलनाडु में मजबूत पकड़ रखने वाली यह पार्टी अक्सर सत्ता की चाबी अपने पास रखती है। विजय के 'स्वच्छ राजनीति' के वादे के साथ इनका जुड़ाव सरकार बनवा सकता है।
- **छोटे दल और निर्दलीय (3-4 सीटें):** सदन में मौजूद 2-3 निर्दलीय विधायक और छोटे दलों के सदस्य इस समय सबसे ज्यादा मांग में हैं। विजय को अपनी पहली सरकार बनाने के लिए इनका 'बिना शर्त' समर्थन चाहिए होगा।
- **विपक्ष का रुख (DMK और AIADMK)** यदि विजय किसी भी दल के साथ औपचारिक गठबंधन नहीं करते, तो उन्हें सदन में बहुमत साबित करने के लिए AIADMK (53 सीटें) के 'मौन समर्थन' या वॉकआउट की जरूरत पड़ सकती है, ताकि बहुमत का आंकड़ा कम हो जाए।

राजस्थान में होंगे चंदन के वन, वन मंत्री ने किया साइट निरीक्षण

लोक टुडे। जयपुर

राजस्थान में पर्यावरण संरक्षण और वन संपदा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देश पर प्रदेश में चंदन के वन विकसित करने की योजना पर काम शुरू हो गया है। इसी कड़ी में वन मंत्री संजय शर्मा ने सिरोही जिले के पिंडवाड़ा क्षेत्र के ग्राम जानापुर पहुंचकर चिन्हित स्थल का निरीक्षण किया।

उन्होंने बताया कि वन विभाग ने प्रदेश में तीन स्थानों को चंदन वन विकसित करने के लिए चयनित किया है, जिनमें जानापुर भी शामिल है। इस पहल का उद्देश्य न केवल हरित क्षेत्र का विस्तार करना है, बल्कि चंदन जैसे बहुमूल्य वृक्षों के माध्यम से आर्थिक और पर्यावरणीय लाभ भी सुनिश्चित करना है। निरीक्षण के दौरान स्थानीय जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी भी मौजूद रहे। सरकार की इस योजना से क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर पैदा होने के साथ-साथ वन संपदा को मजबूती मिलने की उम्मीद है।

जर्नलिस्ट प्रीमियर लीग फाइनल में राजस्थान बना चैंपियन

लोक टुडे। जयपुर

जर्नलिस्ट वेलफेयर ट्रस्ट यूनाइटेड प्रेस क्लब ओर द्वारा आयोजित जर्नलिस्ट प्रीमियर लीग के पहले संस्करण का समापन ताऊ देवी लाल स्टेडियम पंचकूला में रोमांचक अंदाज़ में हुआ, जहां राजस्थान ने हिमाचल को 7 विकेट से हराकर खिताब अपने नाम किया।

टॉस जीतकर राजस्थान के कप्तान एवं प्रेस क्लब जयपुर के अध्यक्ष मुकेश मीणा ने पहले गेंदबाजी का फैसला किया। हिमाचल ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 152 रन बनाए। टीम की ओर से रिम्पू ने 44 रन और नरवीर ठाकुर ने 35 रन की महत्वपूर्ण पारी खेली। राजस्थान की ओर

से सतीश कुमावत ने शानदार गेंदबाजी करते हुए 4 ओवर में 27 रन देकर 4 विकेट लिए, जबकि मनीष दीक्षित ने 3 विकेट झटके। 153 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान की शुरुआत संतुलित रही। शुरुआती झटके के बाद सतीश कुमावत ने 37 गेंदों में 52 रनों की बेहतरीन पारी खेली। उन्हें आदित्य आत्रेय (37) और गर्वित नारंग (17) का अच्छा साथ मिला, जिससे टीम ने आसानी से लक्ष्य हासिल कर लिया। राजस्थान ने 19 ओवर में 3 विकेट खोकर 153 रन बनाते हुए मुकाबला जीत लिया। हिमाचल की ओर से राकेश सकलानी ने 2 विकेट लिए। सतीश कुमावत को उनके शानदार ऑलराउंड प्रदर्शन के लिए मैन ऑफ द मैच और मैन ऑफ द सीरीज चुना गया। कप्तान मुकेश मीणा ने अपनी टीम की जीत के लिए सभी खिलाड़ियों को बधाई दी। उन्होंने कहा की कलम की सिपाहियों ने इंटर स्टेट क्रिकेट टूर्नामेंट में मैदान पर परचम लहराया है। फाइनल मुकाबले में मुख्य अतिथि के रूप में लोकसभा स्पीकर ओम बिरला के ओएसडी राजीव दत्ता मौजूद रहे। इस अवसर पर यूनाइटेड प्रेस क्लब की ओर से दिवंगत पत्रकारों के परिजनों को सहायता स्वरूप आर्थिक राशि भी प्रदान की गई। उनके साथ हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सैनी के मीडिया एडवाइजर परवीन अत्रे और एडीजीपी कौस्तुभ शर्मा भी उपस्थित रहे, जिन्होंने टूर्नामेंट की सराहना की। अपने संबोधन में राजीव दत्ता ने इस पहल की प्रशंसा करते हुए घोषणा की कि टूर्नामेंट का अगला संस्करण जयपुर में आयोजित किया जाएगा।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रिक, प्रकाशन, संपादक - नीरज मेहरा द्वारा बोनस ग्राफिक्स, लक्ष्मी नगर, हटवाड़ा मार्ग, अजमेर रोड, जयपुर - 302006 से मुद्रिक एवं 141, दयानन्द नगर, फेज प्रथम झेलना डूंगरी गली नंबर 19, थाना गांधी नगर, जयपुर (राज.) प्रकाशित प्रबंध संपादक - पी.के.बृजवाल, 9950325930, 9571635930 (कानूनी सलाहकार एडवोकेट कैलाशनाथ भट्ट)